महात्मा गांधी

बापू एवं राष्ट्रपिता के सम्मान से सम्मानित महात्मा गांधी अपने सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह के साधनों से भारतीय राजनैतिक मंच पर 1919 से 1948 तक छाए रहे। गांधीजी ने इस कार्यकाल को भारतीय इतिहास में गांधीयुग के नाम से जाना जाता है। जे. एच. होम्स ने गांधी के बारे में कहा कि 'गांधीजी की गणना विगत युगों के महान व्यक्तियों से की जा सकती है। वे अल्फ्रेड, वाशिंगटन तथा लैफटे की तरह एक महान राष्ट्र निर्माता थे। उन्होंने बिलबर फोर्स, गैरिसन और लिंकन की भाँति भारत को दासता से मुक्त कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे सेंट फ्रांसिस एवं टालस्टाय की अहिंसा के उपदेशक और बुद्ध, ईसा तथा जोरास्टर की तरह आध्यात्मिक नेता थे।'

2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान पर पैदा होने वाले गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचन्द्र गांधी था। 1887 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद गांधीजी बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड गये और 1891 में बैरिस्टर बनकर भारत वापस आये। कुछ दिन राजकोट एवं बम्बई में वकालत करने के पश्चात् एक मुकदमें की पैरवी के लिए 1893 में गांधीजी दक्षिण अफ्रीका गये। अपने 20 वर्ष के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान गांधीजी ने रंगभेद के खिलाफ लड़ाई जारी रखी। गांधीजी ने नेटाल में भारतीय कांग्रेस की स्थापना की। गांधीजी के प्रयासों से ही वहां की गोरी सरकार ने भारतीयों के खिलाफ बनाये काले कानूनों को 1914 में रद्द कर दिया। 1915 में गांधीजी भारत वापस आ गये।

भारत आने पर गांधीजी ने गुजरात प्रांत के अहमदाबाद जिले में साबरमती नदी के किनारे साबरमती आश्रम की स्थापना की। गांधीजी ने गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनीतिक गुरु मानकर उन्हीं के निर्देशन पर भारतीय राजनीति का अध्ययन प्रारंभ किया। 1917 के चम्पारन सत्याग्रह के अन्तर्गत गांधीजी ने बिहार के चम्पारन जिले में नील की खेती करने वाले किसानों पर यूरोपीय मालिकों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों के खिलाफ आन्दोलन चलाया जिसमें उन्हें सफलता मिली। इस आन्दोलन में गांधीजी का सहयोग मजहरुल हक, आचार्य कृपलानी एवं महादेव देसाई ने किया। आन्दोलन के इन्हीं दिनों में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम गांधीजी को 'महात्मा' की उपाधि दी।

खेड़ा में किसानों पर अधिक कर का बोझ सरकार द्वारा डाले जाने पर गांधीजी ने यहां के किसानों का नेतृत्व किया।

Scanned with CamScanner

इन्होंने 1918 में खेड़ा में 'कर नहीं दो' आन्दोलन चलाया। साथ ही सत्याग्रह का प्रयोग किया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें कर की दर कम करवाने में सफलता मिली। 1918 में गांधीजी ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों की वेतन वृद्धि के लिए आमरण अनशन किया। अनशन के चौथे ही दिन सरकार मजदूरों की मांग मानने के लिए विवश हो गयी।

गांधीजी चूंकि गोखले से प्रभावित थे, इसलिए इन्होंने भारतीय राजनीति में ब्रिटिश सरकार के सहयोगी के रूप में प्रवेश किया। इन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध के समय ब्रिटिश सरकार की अभूतपूर्व सहायता की, जिससे खुश होकर सरकार ने इन्हें 'कैसर-ए-हिन्द' सम्मान से सम्मानित किया। परन्तु शीघ्र ही गांधी विदेशी सरकार से निराश हुए। फलस्वरूप सरकार के सबसे बड़े असहयोगी बन गये। गांधी को असहयोगी बनाने के लिए उत्तरदायी कारकों में महत्वपूर्ण थे - रौलेट एक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड, खिलाफत समस्या आदि। गांधीजी ने 1919 में खिलाफत आन्दोलन का नेतृत्व किया। 1920 से 22 तक असहयोग आन्दोलन चलाया। 1920 में यंग इंडिया एवं नवजीवन समाचार पत्रों की स्थापना की। 1924 के बेलगांव में हुए कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की। 1930 में गांधीजी ने 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' के अन्तर्गत 6 अप्रैल 1930 को 79 अनुयायियों के साथ नमक कानून तोड़ने के लिए डाण्डी समुद्र तट के लिए यात्रा आरंभ की। 4 मई को गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। 26 जनवरी 1931 को गांधीजी जेल से छूट गये। जेल से छूटने के बाद गांधी-इरविन के मध्य 5 मार्च 1931 को एक संधि हुई, जिसे गांधी-इरविन समझौता कहा गया। नवम्बर 1931 में गांधीजी ने लन्दन में हुए द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का नेतृत्व किया। गांधीजी ने दलितों के पृथक् निर्वाचन प्रणाली के विरोध में 1932 में जेल में आमरण अनशन किया, फलस्वरूप सरकार को झुकना पड़ा। 7 अप्रैल 1934 को गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को समाप्त कर दिया। 3 सितम्बर 1939 को शुरू हुए दूसरे विश्व युद्ध में गांधीजी ने सरकार के प्रति असहयोग की नीति अपनायी। मार्च 1942 में भारत आये क्रिप्स मिशन द्वारा मई 1942 में प्रस्तुत क्रिप्स प्रस्ताव के बारे में गांधीजी ने कहा कि यह ''उत्तरतिथीय चैक' है''। कालान्तर में नेहरू जी ने दिवालिये बैंक के नाम जोड़ दिया। 8 अगस्त 1942 को गांधीजी ने ऐतिहासिक ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' प्रस्ताव को कांग्रेस से पास करवाया, जिसमें उन्होंने 'करो या मरो' का नारा दिया।

गांधीजी के सत्त् प्रयत्नों के परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 को आजादी प्राप्त हो गयी। 30 जनवरी 1948 को दिल्ली

Scanned with CamScanner

की एक प्रार्थना सभा में नाथूराम गोड्से नामक एक हत्यारे ने गांधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी।

गांधीजी ने रचनात्मक कार्यों को खूब महत्व दिया। इन्होंने 'ग्राम उद्योग संघ', 'तालीमी संघ' एवं 'गो रक्षा संघ' की स्थापना की। गांधीजी ने समाज में व्याप्त शोषण की नीति को खत्म करने के लिए भूमि एवं पूंजी का समाजीकरण न करते हुए आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण को महत्व दिया। इन्होंने लघु एवं कुटीर उद्योगों को भारी उद्योगों से अधिक महत्व दिया। खादी को गांधी ने अपना मुख्य कार्यक्रम बनाया। गांधीजी समाज में फैली हुई कुरीतियों एवं असमानताओं के प्रति जीवन भर संघर्षरत रहे। इन्होंने अछूतों को 'हरिजन' की संज्ञा दी।

गांधीजी के बारे में के. एम. मुंशी ने कहा 'उन्होंने अराजकता पायी और उसे व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया, कायरता पायी उसे साहस में बदल दिया, अनेक वर्गों में विभाजित जनसमूह को राष्ट्र में बदल दिया, निराशा को सौभाग्य में बदल दिया और बिना किसी प्रकार की हिंसा या सैनिक शक्ति का प्रयोग किये एक साम्राज्यवादी शक्ति के बन्धनों का अंत कर विश्व शक्ति को जन्म दिया।'

Scanned with CamScanner